मेहनतकशों का पैग़ाम मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

पाक्षिक

Email : mazdoormorcha@yahoo.co.in
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

- बसें तो चलती नहीं कृष्णपाल, रेल मन्त्री से गुहार का ढिंढोरा! 3
- बीफ-बीफ मत चिल्लाओ, हिम्मत है तो हिंदू कंपनियों का मांस निर्यात बंद कराओ 4
- न्यूयॉर्क में दलित, दिल्ली में ब्राह्मण 5
- नेतागिरी का यही तो लाभ है
- ईएसआई मेडिकल कॉलेज-अस्पताल: नाम बड़े और दर्शन छोटे 8

वर्ष 29 अंक 7 फरीदाबाद, मंगलवार 16-29 फ़रवरी 2016 फोन : - 9999595632 2 ₹

ग्लोबल समिट, विंटेज कार और बीफ़ वाले खट्टर!

लगता है संघ के देशी प्रचारक रहे मनोहर लाल खट्टर को इमेज मेकओवर का निर्देश मिल गया है। इन दिनों वे अपनी गीता जयंती और गाय की पूंछ मार्का इमेज से बाहर आने के लिये उनकी छटपटाहट को साक्षात देखा जा सकता है। लालकिले पर विंटेज कार रैली में बड़ा सा हैट लगाये मुस्कराते हुए खट्टर हॉलीवुड फ़िल्मों के काउब्वाय लग रहे थे। गुड़गांव जैसे इलाकों में विदेशियों को बीफ़ खाने का लाइसेंस देने की बात उनके विचाराधीन है। गुड़गांव में ही मार्च में ग्लोबल निवेश समिट का आयोजन हो रहा है जिसमें दुनिया भर से निवेशकों को आमन्त्रित किया गया है। देखने वाले कह रहे हैं-बदले-बदले मेरे सरकार नज़र आते हैं।

मज़दूर मोर्चा, दिल्ली ब्यूरो

खट्टर को जब अचानक हरियाणा के मुख्यमंत्री के तौर पर ऊपर से थोपा गया था तो चर्चा में उनकी सादगी और ईमानदारी हुआ करती थीं। एनसीआर का मुख्यमंत्री होने के बावजूद और गुड़गांव जैसे ग्लोबल सिटी की कमान सम्भालने के बाद भी शुरूआती दौर में खट्टर अपने पुराने अंदाज़ में बने रहे। उनके सबसे प्रिय कार्यक्रमों में गीताजयंती समारोह अभी हाल तक हुआ करते थे। गौशालायें और येगशिविर उनके लिये मनन-चिंतन की कार्यस्थली बने हुए थे। सरकार की एक मात्र महत्वपूर्ण पहल रही गौ-रक्षा कानूनों में सज़ाओं को कड़ा किया जाना। स्त्री सुरक्षा के नाम पर महिला थाना जैसी मध्ययुगीन मानसिकता वाली पहल भी देखने को मिली।

अपने भाषणों में खट्टर ने स्वदेशी समेत तमाम संघी अलाप ही जारी रखे। लगता था कि वे इसी तरह 5 साल का कार्यकाल निकाल देंगे। उनकी प्रसिद्धि संघ के विशवासपात्र और प्रधानमंत्री मोदी के वफ़ादार की होने से लगता नहीं था कि उन्हें स्वयं को बदलने की कोई जरूरत पड़ेगी। ऐसे में अचानक क्या हुआ? खट्टर के लिये स्वयं को 'आधुनिक' दिखाना इतना जरूरी क्यों हो गया? वह भी इतनी तेज़ी के साथ कि विशवास ही न हो।

दरअसल, एक सरसरी दृष्टि से भी हरियाणा के राजनीतिक पटल को देखने से बेहद निराशाजनक तस्वीर नज़र आती है। अनुभवी प्रेक्षकों का तो यहां तक कहना है कि यदि आज चुनाव कराये जायें तो हरियाणा में भाजपा का हाल दिल्ली से भी बुरा होगा। ऐसे में खट्टर की स्थिति जलते हुए रोम में बांसुरी बजाते नीरो वाली नज़र आती है।

हालात का तकाज़ा था कि या तो खट्टर बदलें या उनको ही बदल दिया जाये। लगता है खट्टर का ब्रीफ़ यह है कि वे स्वयं को आधुनिक, गतिशील और सहिष्णु दिखायें।

कहते हैं खट्टर पर हर तरह के दबाव काम कर रहे हैं। 'कुछ कर दिखाने' का दबाव निरंतर बढता ही जा रहा है। उनके वरिष्ठ मंत्री मंडलीय सहयोगियों की महत्वाकांक्षा कम नहीं हुई है। लगता है खट्टर को इस पृष्ठ-भूमि में ही छवि सुधार की हिदायत दी गयी है। ग्लोबल समिट और विंटेज कार रैली तो पुरानी बाजीगरी हो गयीं। खट्टर ने दूसरों से मैदान मारा है तो बीफ़ खाने के लाइसेंस को लेकर। इतना 'लिबरल' तो कोई कांग्रेसी मुख्यमंत्री भी नहीं हुआ- कुर्सी के लिये गौ माता को भी दांव पर लगा दिया। देखना है कि रोज़गार मंहगाई, फ़सल के गिरते दाम और अपराध के बढते ग्राफ़ के बीच खट्टर का छवि परिवर्तन हरियाणा की जनता का हृदय परिवर्तन कर पायेगा कि नहीं?

जेएनयू में, यह तो होना ही था

एम.एल. गोलवरकर

दिल्ली ब्यूरो (म.मो.) एमडीयू, आई.आई.टी. चेनैई और सेंट्रल यूनिवर्सिटी हैदराबाद के बाद जेएनयू (जवाहर लाल नेहरू) यूनिवर्सिटी में यह तो होना ही था; क्योंकि जेएनयू भारतीय वामपंथ का एक बड़ा ठिकाना है। यह वामपंथ की वह नर्सरी है जहां से वामपंथी पैदा एवं प्रखर होकर निकलते हैं। आरएसएस एवं बीजेपी की आंख में सदैव चुभने वाले इस जेएनयू रूपी कांटे को निकालने के लिये इनकी सरकार कुछ भी कर गुजरने को तैयार है। आरएसएस की घातक विचारधारा को समझने के लिये सन् 1942 में इनके गुरू गोलवर्कर के निम्नलिखित कथन को पढना जरूरी है- "**हिन्दुओ, ब्रिटिश से लडने में अपनी ताकत बर्बाद मत करो। अपनी ताकत हमारे भीतरी दुश्मनों यानि मुसलमानों, ईसाईयों और कम्युनिस्टों से लडने के लिए बचाकर रखो।**"

यह वह काल था जब तमाम भारतवासी (संघियों को छोड़कर) हिन्दू, मुस्लिम, सिख इसाई भारतमाता की आज़ादी के लिये एकजुट होकर लड़ रहे थे। इसी से समझा जा सकता है कि संघियों को ब्रिटिश कितने प्यारे थे और मुसलमान इसाई व कम्युनिस्ट इनकी आंख में कितने चुभते रहे हैं।

जहां तक बात है जेएनयू में भारत विरोधी व पाकिस्तान समर्थक नारे लगाने की तो वामपंथी ऐसी किसी भी विचारधारा में विश्वास नहीं रखते। हां जेएनयू में इस विचार धारा के कुछ लोग ज़रूर घुस आये होंगे, बस उन्हीं की आड़ में भाजपा जेएनयू के पूरे वामपंथ को लपेट कर कुचलना चाहती है। पिछले दिनों यहां हुए छात्र यूनियन के चुनाव में आरएसएस के छात्र संगठन एबीवीपी (अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद) को बुरी तरह जो मुंह की खानी पड़ी थी, उस हार का बदला चुकाने से जोड़ कर भी इस प्रकरण को देखा जा रहा है।

इस संभावना से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि वामपंथियों को लपेटने के लिये खुद संघियों ने ही भारत विरोधी नारे लगवाये हों; क्योंकि ब्रिटिश कूटनीतिज्ञ स्वयं मंदिरों में गाय का सिर और मस्जिदों में सूअर का सिर फ़िंकवा कर दंगे कराते रहे हैं। वैसे भी अब तो छात्र नेता कन्हैया व कम्युनिस्ट नेता डी राजा की बेटी अपराजिता के भाषण के वीडियों क्लिप प्रकाशित हो चुके है जिनमें एक भी शब्द देश के विरुद्ध नहीं कहा गया है। हां भाजपा एवं संघ को उन्होंने खूब जम कर उधेड़ा है। इससे लगता है कि संघ एवं भाजपा ही अपने आप को देश समझने लगे हैं। इनके विरुद्ध बोलना ही देशद्रोह की श्रेणी में माना जाने लगा है। ब्रिटिश सरकार से सांठगांठ रखने वाले आज देशद्रोही व देशभक्त होने का प्रमाणपत्र देने वाले बन बैठे हैं।

संबंधित खबर पेज दो पर

ख़बर दार

काज़ी जी दुबले हुए शहर के अंदेशे में

राजस्थान में दो मुस्लिम महिलायें मुंबई से काज़ी की ट्रेनिंग लेकर क्या आईं कि कट्टरपंथियों के खेमे में मानो मर्दवादी भूचाल आ गया। एक स्त्री निर्णय करेगी फ़ैसले देगी, विवाद सुलझायेगी? एक ओर ये महिला काज़ी और इन्हें समर्थन देती मुस्लिम महिलाओं का समूह और दूसरी ओर पितृसत्ता के नज़रिये से स्त्रियों को हांकने वाली आदत और जिद। माजरा पूरा समझने के लिये मज़दूर मोर्चा ने महिला और पुरुष काज़ियों का काल्पनिक साक्षात्कार किया।

म.मो.-मेरा पहला सवाल महिला काज़ी से है। काज़ी बन कर आपको कैसा लग रहा है?

महिला काज़ी-मुझे ही क्या आज सारी मुस्लिम महिलाओं को बहुत अच्छा एहसास हो रहा है। अब हम औरत के नज़रिये से शादी, तलाक, मेहर जैसे मसलों को तय करने में आगे बढ सकते हैं। यह पता नहीं कि इन भाई साहब (पुरूष काज़ी की तरफ़ इशारा) को क्या तकलीफ़ है?

म.मो.-(पुरुष काज़ी से) जनाब आप क्यों लाल-पीले हो रहे हैं? इन महिलाओं ने जब पूरी ट्रेनिंग ली है तो इन्हें बतौर काज़ी काम करने का मौका तो मिलना चाहिये।

पु.काज़ी-मैं लाल-पीला इसलिये हो रहा हूं कि कल को कहीं नीला पड़ने की नौबत न आ जायें। औरत भला निर्णय कैसे ले सकती है। जब घर के निर्णय भी मर्द लेते हैं तो समाज के फ़ैसले भला ये औरतें ले पायेंगी?

म.मो.-मोहतरमा आपका क्या कहना है?

म.काज़ी-हम क्या, अब तो हमारे फ़ैसले ही बोलेंगे। सारी दुनिया में, यहां तक कि पाकिस्तान में भी, तीन तलाक गैरकानूनी करार दिया गया है। पर हमारे मर्द काज़ियों की मेहरबानी से हिन्दुस्तान में मुस्लिम औरतों को तीन तलाक का दंश आज भी झेलना पड़ रहा है। अगर काफ़ी संख्या में महिला काज़ी हों तो ऐसी दिक्कतें सामने नहीं आयेंगी।

म.मो.-बुर्के के बारे में क्या ख्याल है? क्या इससे स्त्रियां अधिक महफूज नहीं हो जातीं? क्या प्रदूषण से उनका बचाव नहीं होता?

पु.काज़ी-बिल्कुल सरासर ऐसा ही होता है।

म.काज़ी-अगर ऐसा ही होता है तो पुरुषों को भी बुर्का पहनना चाहिये ताकि वे भी अधिक सुरक्षित हो और प्रदूषण से बचे रहें।

पु.काज़ी-हम ऐसा हरगिज़ स्वीकार नहीं करेंगे।

म.काज़ी-एक जमाना था जब लोग यह भी स्वीकार नहीं करते थे कि पृथ्वी गोल है और सूरज के चारों तरफ़ चक्कर काट रही है।

म.मो.-महिलाओं के काज़ी बनने से पुरुषों की रोज़ी-रोटी पर भी तो असर पड़ेगा इस विषय में आप दोनों को क्या कहना है?

पु.काज़ी- दुरूस्त फ़र्माया आपने। काज़ियों की जितनी जगहें महिलाओं के पास जायेंगी उतने ही पुरुष काज़ी बेरोज़गार होंगे। सोचिये, उन परिवारों का भला क्या होगा?

म.काज़ी-अरे साहब, यदि पुरुष की बज़ाय महिला को रोज़गार मिलेगा तो भी उसकी तनख्वा परिवार में ही तो जायेगी। फ़िर इसमें नुकसान क्या और किसका? महिला और पुरुष में जो जिस काम के लायक है, उसे ही वह मिलना चाहिये।

म.मो.-आप लोग काज़ियों को क्या संदेश देना चाहेंगे?

म.काज़ी-यही कि अब एकतरफ़ा फ़ैसले देने के दिन लद गये।

पु.काज़ी-यह कि काज़ी भाईयों आंख खोलकर फ़ैसले देना सीखो, ज़माना तेज़ी से बदल रहा है।

गुड़ नहीं तो गुड़ से जुमले हैं खट्टर के पास

बल्लबगढ (म.मो.) 6 फ़रवरी को मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर स्थानीय अनाज मंडी में घेर-घोट कर लाई गयी भीड़ को खुश करने के लिये गुड़ तो नहीं परन्तु गुड़ से मीठे हवाई तोहफ़ों की बरसात जरूर कर गये। उनकी हर बात पर भीड़ से तालियां बजवाने का भी पूरा इंतजाम था।

मीठे-मीठे तोहफ़ों की इस बरसात में खट्टर ने ग्रेटर फ़रीदाबाद (नहर पार) को मैट्रो ट्रेन से जोड़ने का सबसे बड़ा हवाई तोहफ़ा दिया। इस पर तालियां पीटने वाली भीड़ को इस मैट्रो ट्रेन से कोई लाभ होने वाला नहीं, यदि यह चल भी गयी तो। सर्वविदित है कि मैट्रो ट्रेन का हरियाणा सरकार से कोई ताल्लुक नहीं है। यह केन्द्र व दिल्ली सरकार द्वारा नियन्त्रित एक विशुद्ध व्यापारिक पेशेवर उपक्रम है जो हरियाणा सरकार की रोडवेज बसों की तर्ज़ पर घाटे में नहीं चलाई जा सकती। इसलिये ग्रेटर फ़रीदाबाद में यह मैट्रो तभी पहुंचेगी जब वह पूरी तरह यानी नौयडा की तरह विकसित हो जायेगा। जो हालात हरियाणा सरकार ने बना रखे हैं, आगामी 15 वर्ष तक उसके विकसित होने के कोई आसार नहीं।

विदित है कि इससे पूर्व फ़रीदाबाद-गुड़गांव रूट पर भी मैट्रो ट्रेन की जुमलेबाज़ी खट्टर व कृष्णपाल कई बार कर चुके हैं। इस बाबत डी एम आर सी (दिल्ली मैट्रो रेल कार्पोरेशन) ने स्पष्टीकरण भी दे दिया है कि इस रूट पर फ़िलहाल ऐसी कोई संभावना नहीं है। समझा जाता है कि जब कभी संभावना होगी तो बदरपुर-महरोली को मैट्रो रेल से जोड़ कर गुड़गांव का रूट बन सकता है न कि कृष्णपाल द्वारा घोषित-अनखीर-सूरजकुंड इत्यादि से होते हुए। लिहाज़ा खट्टर और कृष्णपाल लोक-लुभावन घोषणायें तो आये दिन करते हैं, परन्तु इन परियोजनाओं के पूरा होने की तारीख कभी नहीं बताते।

घोषणा करने में कोई खर्चा तो लगता नहीं, इसलिये खट्टर साहब ने बल्लबगढ के सेक्टर 2 में एक (राजकीय) महिला कॉलेज खोलने, बल्लबगढ-सोहना रोड पर रेलवे पुल को चौड़ा करने, मुजेसर रेलवे फ़ाटक के स्थान पर अंडरपास बनाने जैसी कई घोषणायें भी कर डाली। लेकिन ये सब काम कब तक पूरे हो जायेंगे, इसकी कोई तारीख गोल कर गये।

जहां तक सवाल सेक्टर 2 में कॉलेज खोलने का हैं, तो उससे पूर्व पहले से ही खुले कॉलेजों की दशा सुधार देते तो ज़्यादा बेहतर होता। तिगांव तथा सेक्टर 16 ए के नेहरू

शेष पेज तीन पर